विराट वैभव

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, 21 फरवरी 2019

साहित्य अकादेमी ने दी नामवर सिंह को श्रद्धांजलि

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने हिंदी आलोचना के 'शिखर पुरुष' के रूप में स्वीकृत डॉ. नामवर सिंह को श्रद्धांजलि दी है। अकादेमी का मानना है कि डॉ. नामवर सिंह के निधन से भारतीय साहित्य को बड़ी क्षति हुई है जिसे पूरा नहीं किया जा सकता। इसलिए साहित्य अकादेमी परिवार डॉ. नामवर सिंह के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है। बता दें कि बीसवीं सदी के छठे दशक से हिंदी आलोचना क्षेत्र में अपनी सक्रिय उपस्थिति से नामवर सिंह ने हिंदी साहित्य के मूल्यांकन और दिशा-निर्धारण में महत्तवपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। नामवर सिंह हिंदी आलोचना की वाचिक परंपरा के आचार्य के रूप में समादृत थे। नामवर सिंह कबीर की तरह वैचारिक प्रस्ताव रखते रहे। रूढ़िवादी चिंतन, अंधविश्वास, कलावाद, व्यक्तिवाद आदि के ख़िलाफ़ चिंतन को प्रेरित करते रहे। नई चेतना का प्रसार करते रहे। अपने समय के प्रश्नों से टकराते हुए युगचेतना से संपृक्त एक बेहद जागरुक आलोचक की विश्लेषण क्षमता, साहित्य के मर्म की गहरी समझ और तथ्यों को तार्किक रूप से प्रस्तुत करने की उनकी अभिनव शैली उनके सृजनकर्म को विशिष्ट बनाती है। हिंदी जनता की चेतना का प्रतिनिधित्व करने या प्रवक्ता बनने की क्षमता जितनी नामवर सिंह में थी, उतनी किसी दूसरे लेखक या विद्वान में नहीं मानी जा सकती। नामवर सिंह की इस विशिष्ट पूर्व परंपरा में भारतेंदु, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, प्रेमचंद, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा, भगवत शरण उपाध्याय-जैसे लेखक और विद्वान ही दीखते हैं। इन विद्वानों ने जनचेतना की जरूरत से जुड़े प्रश्नों से संबंधित ज्ञान की जितनी शाखाओं में व्यापकता और गहराई के साथ विभिन्न विषयों पर लिखा है, उतने बड़े पैमाने पर नामवर सिंह ने लिखा भले ही न हो, लेकिन प्रतिक्रियावादी शक्तियों से वैचारिक संघर्ष करने तथा उनकी तैयारी उन्हीं विद्वानों की तरह गहन और व्यापक थी।